B - III
L - 12
MIH

आर्थिक नीति

कृषि का वाणिज्यिकरण / उद्योगों के पतन के कारण

- औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात या 1813 के पश्चात भारत से कच्चे मालों का निर्यात बढ़ा। इससे कच्चे मालों की कीमतें भी बढ़ी तथा भारतीय उत्पादों की लागत भी।

नोट :-
19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में रेलवे का तेजी से विकास हुआ रेलवे के कारण न केवल शहरी उद्योगों को नुकसान हुआ बल्कि ग्रामीण उद्योगों को भी नुकसान हुआ।

- भू-राजस्व का अत्याधिक दबाव, प्राकृतिक आपदा इत्यादि भी कुछ सीमा तक उद्योगों के पतन के लिए उत्तरदायी थे।

प्र०- ब्रिटिश भारत में कारीगरी उद्योगों के पतन के लिए उत्तरदायी कारणों को संक्षेप में बताएं ?

प्र०- ब्रिटिश औद्योगिक क्रान्ति किस सीमा तक भारतीय उद्योगों के पतन के लिए उत्तरदायी थी ?

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

नोट :- विउद्योगीकरण

विउद्योगीकरण से आशय है अर्थव्यवस्था में उद्योग की भागीदारी में गिरावट आना जैसे- औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का सिमटना, राष्ट्रीय आय में उद्योग की भागीदारी का कम होना इत्यादि।

उद्योगों के पतन के आर्थिक परिणाम

- ब्रिटिश शासनकाल में उद्योगों के पतन एवं वैकल्पिक उद्योगों का विकास न हो पाने के कारण औद्योगिक ढांचा नष्ट हो गया और विनिर्माण के क्षेत्र में हम पिछड़ गए।
- कुछ शहरों की पहचान केवल उद्योगों को लेकर थी जैसे- सूरत, ढाका, कासिम बाजार इत्यादि इन शहरों का भी पतन हुआ। इसी के साथ प्रायः सभी मुख्य शहरों के उन क्षेत्रों का पतन हुआ जो औद्योगिक उत्पादों के लिए जाने जाते थे।
- उद्योगों के पतन एवं वैकल्पिक रोजगार के साधनों के अभाव के कारण बेरोजगारों की संख्या बढ़ी और यह कारीगरों की दयनीय दशा का एक महत्वपूर्ण कारण बना।
- वैकल्पिक रोजगार के अभाव में कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता बढ़ी इससे खेती

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

योग्य भूमि का विखंडन हुआ। और इससे उत्पादकता कम हुई।

- पहले से ही कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता अधिक थी उद्योगों के पतन के कारण निर्भरता और बढ़ी, भूमि मालिकों के पास कम मजदूरी पर श्रम का विकल्प उपलब्ध था जिससे किसानों का शोषण हुआ और भूमि मालिको ने कृषि के क्षेत्र में नवाचार की उपेक्षा की
- व्यापार की प्रकृति में भी परिवर्तन हुआ उद्योगों के पतन के कारण भारत को तैयार मालों के आयातक के रूप में जाना जाने लगा।
- चूँकि उद्योगों का पतन ब्रिटिश औद्योगिक फायदे के कारण हुआ अतः भारत में बाजार के विकास के लिए क्रमशः परिवहन के आधुनिक साधनों का विकास भी किया गया
- 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में ग्रामीण उद्योगों को भी नुकसान हुआ और गाँवों में जजमानी व्यवस्था भी कमजोर पड़ने लगी।

नोट :- • भारत में उद्योगों का पतन अचानक सभी क्षेत्रों में नही हुआ
• सभी उद्योगों का पतन नही हुआ इसके कई कारण थे जैसे- भारत के सभी क्षेत्रों में परिवहन के साधन विकसित नही थे -

KGS IAS

जातिगत लगाव के कारण भी लोगों ने अपने व्यवसाय को बनाए रखा।

ब्रिटिशकाल में आधुनिक उद्योगों का विकास

कारण :- • विभिन्न कारणों से ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर मंदी का प्रभाव था जैसे- हालैण्ड, फ्रांस, जर्मनी इत्यादि देशों में औद्योगिकरण के कारण यूरोप में ब्रिटिश वस्तुओं को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा ब्रिटिश उद्योगपति मंदी से बाहर निकलने के लिए भारत में परिवहन के साधनों के विकास के लिए सरकार पर दबाव बना रहे थे जैसे रेलवे के विकास के लिए।

• पक्की सड़कों एवं रेलवे के विकास के कारण आधुनिक परिवहन के साधन उपलब्ध थे। और औद्योगिक विकास में परिवहन के उन्नत साधन प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

• यूरोपिय बाजारों में भी या ब्रिटिश बाजारों में भी पूंजी निवेश इतना लाभदायक नहीं था अतः ब्रिटिश पूंजीपति भी भारतीय बाजारों में निवेश के इच्छुक थे।

• ब्रिटिश भारतीय सरकार के सहयोगी के रूप में भारतीय महाजनों और व्यापारियों के पास भी कुछ पूंजी थी जो उद्योगों में निवेश करना

चाहते थे।

- भारत में बाजार, अन्तर्राष्ट्रीय बाजार, खनिज संसाधन एवं कच्चे माल की उपलब्धता एवं सस्ता श्रम इत्यादि अन्य कारक थे जो भारत में आधुनिक उद्योगों के विकास में सहायक थे।

ब्रिटिश स्वामित्व में उद्योग :-

- अंग्रेजो ने जूट उद्योग, खनन उद्योग, चाय काफी के बगान, गन्ना, लकड़ी इत्यादि से संबंधित उद्योगों में पैसे निवेश किए इसके अतिरिक्त ब्रिटिश पूंजीपतियों ने रेलवे बैंक इत्यादि क्षेत्रों में भी निवेश किया।
- इन्होंने उन क्षेत्रों में निवेश किया जिसमें ब्रिटिश उद्योगों मे प्रतिस्पर्धा नही थी और कुछ निवेश या उद्योग तो पूरक की भूमिका में थे जैसे- जूट उद्योग, रेलवे इत्यादि
- ब्रिटिश मैनेजिंग एजेंन्सियों बैंक इत्यादि का ब्रिटिश उद्योगपतियों को अधिकतम सहयोग मिला
- भारतीय सरकार से भी उन्हे अधिकाधिक सहयोग मिला।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

स्वदेशी स्वामित्व में उद्योग

- अधिकांशतः भारतीय पूँजीपतियों ने सूती कपड़ा उद्योग में निवेश किया। इसके अतिरिक्त सीमेंट गन्ना, साबुन, माचिस इत्यादि उद्योगों में भी पैसे लगाए। (1907 में TISCO की स्थापना हुई)
- ब्रिटिश मैनेजिंग एजेंसियों, बैंक एवं सरकार से अपेक्षित सहयोग नहीं मिला बल्कि ये कई बार बाधा भी उत्पन्न करते थे।
- इसके बावजूद भारतीय उद्योगों का विकास हुआ 20वीं सदी में राष्ट्रीय आन्दोलन, दोनों विश्व युद्ध तथा महामंदी से भी भारतीय उद्योगों को लाभ हुआ।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Note:-

- ब्रिटिश काल में क्षेत्रीय दृष्टिकोण से असंतुलित विकास हुआ
- भारी उद्योगों का लगभग अभाव
- पूँजी एवं तकनीक की समस्या।
- लगभग 90 प्रतिशत मशीनों का आयात आजादी के समय किया जा रहा था।
- भारत में कुछ उपभोक्ता उद्योग तो था लेकिन हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

परिवहन एवं संचार

रेलवे | पक्की सड़के | स्टीमर | वायुयान

पोस्ट ऑफिस – ब्रिटिश के समय
टेलीग्राम
टेलीफोन → डलहौजी कलकत्ता से आगरा
1853 में

- 1853 में रेलवे का विकास मुम्बई से थाणे के बीच
- पक्की सड़के – G.T. ROAD

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR